मस्तिष्कीय परिवर्तन के लिए प्रयोग आवश्यक

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

बीदासर, 2 अप्रैल 2009।

आचार्यप्रवर ने तेरापंथ भवन के प्रांगण में उपस्थित जनमेदनी व सुरत से समागत अणुव्रत के कार्यकर्त्ताओं को संबोधित करते हुए फरमाया कि 'सूरत के कार्यकर्त्ता गुजरात क्षेत्र में अहिंसा प्रशिक्षण का अच्छा काम कर रहे हैं और वे मस्तिष्कीय परिवर्तन का कार्य कर रहे हैं। मस्तिष्कीय परिवर्तन बहुत कठिन काम होता है। मस्तिष्कीय परिवर्तन के लिए प्रयोग आवश्यक होता है, उन्होनें प्रसन्नता व्यक्त करते हुए फरमाया कि समणियों को पुनः अहिंसा प्रशिक्षण के कार्य के लिए भेजा जा रहा है जो सभी के लिए आवश्यक है। अहिंसा का प्रशिक्षण देकर मनुष्य के विकृत भावों को अच्छा बनाने की प्रक्रिया है और अहिंसा प्रशिक्षण के द्वारा अनेक लोग लाभान्वित हुए। जो हिंसा में विश्वास करते थे उनमें अहिंसा की बढ़ने का संकल्प जागा।

आचार्यप्रवर ने आचार्य तुलसी के संस्मरणों को प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आचार्य तुलसी ने जो ग्रंन्थों में समाहित धर्म था उसे अणुव्रत के माध्यम से बाजार में लाने का प्रयास किया था। धर्म केवल ग्रन्थों में ही नहीं होना चाहिए वह हर व्यक्ति के जीवन व्यवहार में झलके तो इसकी सार्थकता सिद्ध हो सकती है और सभी के लिए उपयोगी हो सकता है। धर्म में अच्छी बातें होती है किंतु जो व्यक्ति अपने जीवन व्यवहार में पालन करता है वह सही अर्थ में धर्म को मानने वाला हो सकता है। जिस व्यक्ति में भावात्मक विकास नहीं होता उसका मन, शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता। व्यक्ति समाज, परिवार में रहता है जब उसका भावात्मक विकास नहीं होता है तो न परिवार के लिए अच्छा होता है और न समाज के लिए अच्छा हो सकता है। सुख–शांति व सफल जीवन जीने के लिए जरूरी है भावात्मक विकास और मस्तिष्कीय परिवर्तन।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि धीर वह पुरुष होता है जो सहन करने वाला होता है। जैसे हीरा और कंकड़ देखने में समानता होती है किंतु हीरा सहन कर लेता है इसलिए वह हीरा होता है। कार्यकर्त्ता में भी त्याग, मनोलब काम करने का मनोबल होना चाहिए। एक कार्यकर्त्ता को नींदा आलोचना का भी सामना कर पड़ सकता है किंतु उसको सहन करते हुए जो आगे बढ़ जाता है अधीर नहीं होता आगे जाकर अच्छा कार्यकर्त्ता बन सकते हैं और समाज वे देश के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

अणुव्रत प्रभारी मुनिश्री सुखलालजी ने अहिंसा यात्रा के उपलब्धियों की चर्चा करते हुए सूरत में सघन रूप से चलने वाले अणुव्रत कार्यक्रमों का संक्षेप में परिचय दिया।

इस अवसर पर सूरत अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री बाबूभाई, सेवा सेतु के अध्यक्ष श्री उत्तमभाई, सोनावाला ट्रस्ट कपराड़ा सबरी आश्रम के अध्यक्ष श्री नीतिन भाई ने आचार्यप्रवर महाप्रज्ञ के समक्ष अपने विचार व्यक्त किये जिनका प्रवास व्यवस्था समिति बीदासर के अध्यक्ष श्री बाबूलाल सेखानी, श्री मोहलाल चौरड़िया, चुरूजिला अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री चौथमल बोथरा ने साहित्य भेंट कर स्वागत किया।

– अशोक सियोल